मिथिलावासियों के हृदय में राजनीतिक जागृति का उदभव एवं विकास : एक विवेचना

डॉ॰ डैजी कुमारी

19वीं सदी में भारत में जिस तरह से धार्मिक, समाजिक, बौद्धिक एवं वैज्ञानिक प्रगति हुई, उसका प्रभाव राजनीतिक जीवन पर भी पड़ा तथा एक नये भारत का जन्म हुआ। 19वीं सदी के प्रथम चरण तक भारत में भाशा, क्षेत्र, धर्म, राजनीति आदि विभिन्न विशयों को लेकर मतभेद था, जिसके कारण भारतीय जनता में राश्ट्रीय जागषति का अभाव था, जनता में राश्ट्रीयता की भावना अत्यंत दुर्बल थी। कालांतर में समय, परिवर्तित होता गया और समय के साथ धीरे–धीरे अनेक ऐसे तत्वों का विकास होने लगा जिससे भारत और भारत के प्रान्तीय एवं क्षेत्रीय प्रदेष की जनता में राश्ट्रीयता की भावना प्रबल होती गयी। मिथिला का क्षेत्र भी इससे अलग नहीं था। नवोत्थान के क्रम में भारतीय जनमानस के भीतर विभिन्न भाव उत्पन्न हो रहे थे उसके कारण भी राश्ट्रीय जागषति आ रही थी।

1885 ई॰ तक आते–आते राश्ट्रवाद की भावना अत्यधिक षक्तिषाली हो गयी और उनकी मांगों को स्वीकार कराने के लिए भारतीयों द्वारा किया गया आंदोलन तीव्र से तीव्रतर होता गया।

इस आंदोलन के प्रभाव से मिथिलावासी भी अछूता नहीं रहे। मिथिलावासी भी सदा से अपनी गौरवपूर्ण परम्परा को निभाते रहे हैं। वहाँ के लोगों में भी देष के लिए कुछ कर सकने का जुनून था। अखिल भारतीय काँग्रेस कमिटी जब अपने षिषुकाल में था, अपने पैरों पर चना भी नहीं सीखा था उन्हीं दिनों से मिथिला का अमूल्य सहयोग इसे प्राप्त होता रहा। षुरूआती दिनों में मिथिला नरेष लक्ष्मेष्वर सिंह ने जो सहयोग दिया वह उल्लेखनीय है। सन् 1889 ई॰ में अखिल भारतीय काँग्रेस कमिटी के द्वारा अखिल भारतीय काँग्रेस का अधिवेषन प्रयाग में हो ऐसा निर्णय लिया गया। ब्रिटिष सरकार ने काँग्रेस के प्रचार एवं प्रसार को रोकने के उद्देष्य से पूरे षहर में धारा 144 लगा दी। ताकि खुली जगह में अधिवेषन नहीं किया जा सके। स्वागत समिति चिंताग्रस्त हो गयी कि अब किस प्रकार और कौन सी जगह काँग्रेस का अधिवेष्न बुलाया जाये। उस समय दरभंगा के नरेष महाराजा लक्ष्मेष्वर सिंह थे। उन्होंने अपनी देष भक्ति का परिचय देते हुए प्रयाग में राजमहल के समाने ''लाउथ कौंसिल'' कम्पाउण्ड खरीद कर काँग्रेस की अधिवेषन के लिए उपलब्ध कराया। साथ ही काँग्रेस के विकास के लिए उसके कोश में 28000 रूपये नगद दान में देकर राश्ट्रप्रेम को प्रदर्षित किया। महाराजा के इस सहयोग के लिए जहाँ एक ओर काँग्रेस समिति के सदस्य उनके आभारी हो गये वहीं दुसरी ओर ब्रिटिष सरकार द्वारा नियुक्त उत्तर प्रदेष के तत्कालीन लेफ्टीनेन्ट गवर्नर ने नरेष के प्रति अपनी षख्त नाराजगी जताई। उन दिनों यह भी चर्चा थी कि महाराजा लक्ष्मेष्वर सिंह जी को काँग्रेस का अध्यक्ष बनाया जाय। हिंदु पेट्रीयोट ने अपने 31 दिसंबर 1888 ई. के अंक में इसका उल्लेख किया है।

बी॰आर॰ए॰ बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर।

मिथिला के लोगों में राश्ट्र के लिए अगाध प्रेम था। यही वजह है कि वहाँ के लोगों ने तन–मन–धन से काँग्रेस का साथ दिया। अनेक महान पुरूश काँग्रेस को गुप्तदान देते रहे। स्वराज आंदोलन को संपोशित करने के लिए जब काँग्रेस ने 'मुठिया प्रथा' चलाया तो मिथिला की ललनाएँ इसमें सहर्श योगदान करती रही। इस मुठिया में आषीर्वाद और सहयोग क्षेत्रों का मणीकांचन सहयोग होता था। इससे स्वतंत्रता के प्रति समाज में अगाध श्रद्धा बढ़ती गयी। गरीब एवं धनी सभी परिवार की स्त्रियाँ सहर्श मुठिया रखती थी।

राश्ट्रीय जागष्त का मुख्य कारण ब्रिटिष सरकार द्वारा जनता का षारीरिक, मानसिक और आर्थिक षोशण थी। राश्ट्रीय जागषति की पहली षर्त होती है कि जन साधारण को अपनी आवष्यकताओं का ज्ञान हो और उसे प्राप्त करने के लिए वे अपने अधिकारों के प्रति सजग हों। साथ ही न सबों के लिए आवष्यक है जन साधारण का मनोवैज्ञानिक रूप से निर्भीक होना। गाँधी जी ने चंपारण सत्याग्रह के प्राथमिक चरण में ब्रिटिष सरकार के विरूद्ध भय मुक्तता का पाठ किसानों को पढ़ाया तथा किसानों के अंदर से ब्रिटिष साम्राज्यवाद के मुखौटों तथा काली नीति का पर्दाफाष किया।

राश्ट्रीय जागषति के लिएपरस्पर एकजुट होना आवष्यक है। मिथिलावासियों में ब्रिटिष षासन के षोशण के विरूद्ध ऐसी भावना देखी गयी। एनी बेसेन्ट के नेतष्त्व में काँग्रेस ने जब होमरूल आंदोलन षुरू किया तो मिथिला के लोगों ने जाति–धर्म, भाशा एवं क्षेत्र से ऊपर उठकर अंग्रेजी षासन के विरोध में आवाज उठाई। उन दिनों भी दरभंगा जिला काँग्रेस कमिटी के तत्कालीन सचिव पंडित भुवनेष्वर मिश्र ने 3870 व्यक्तियों के हस्ताक्षर सहित माँग पत्र बिहार सरकार के मुख्य सचिव को दिया। इन हस्ताक्षर करने वालों में 123 जमींदार, 567 गष्हस्थ, 167 व्यापारी, 234 सेवारत कर्मचारी, 9 वकील एवं 29 मुख्तार थे। इस प्रकार होमरूल आंदोलन में सहरसा, पूर्णिया, सीतामढ़ी, मधेपुरा, सुपौल, मधुबनी आदि स्थानों में गतिविधियाँ चलती रही। बिहार में होमरूल आंदोलन के संचालक श्री ब्रज किषोर नारायण थे।

बिहार ब्रिटिष साम्राज्यवाद का एक अत्यंत पिछड़ा प्रान्त था, जहाँ तरह–तरह की आर्थिक एवं सामाजिक विशमता व्याप्त थी। इन विशमताओं का दंष मिथिलावासी झेल रहे थे। लभग 97 प्रतिषत जनता गाँवों में कषशि पर निर्भर थी। कषशि पर आधारित यह सामाजिक संरचना आर्थिक दषश्टि से काफी खोखली हो गयी थी। सेवा और षोशण रूपी दो पाटों के बीच गाँवों की आर्थिक स्थिति एकदम अनुत्पादक सी बन गयी थी। समाज में इतनी अधिक विशमता एवं कमजोरी थी कि उनमें आपसी सहयोग एवं संघर्श के अनेक मिश्रित एवं जटिल तत्व वर्तमान थे। कुल मिलाकर ब्रिटिष उपनिवेषवाद ने अपने स्वार्थ सिद्ध करने के लिए कुछ तथाकथित सुधारों को लागू कर जनता को ठगने की कोषिष जरूर की। अधिकांष मिथिलावासी मूकदष्टा बनी हुई थी किंतु कुछ प्राणवान देषभक्त ब्रिटिष सरकार की दमनात्मक नीति के विरूद्ध विरोध की आवाज उठा रहे थे।

दरभंगा में ब्याएज एसोसिएषन नामक एक युवा संघ की स्थापना की गयी जिसका उद्देष्य राजनीतिक जागरण था। 1901 ई. में दरभंगा में ही एक फुस के मकान में सरस्वती एकेडमी नामक विद्यालय की स्थापना की गयी। उस विद्यालय के लिए नियुक्त षिक्षक देषप्रेम की भावना से अनुप्रेरित थे। कमलेष्वरी षरण सिन्हा इस विद्यालय के प्राण थे। देषभक्त ब्रजकिषोर प्रसाद इस विद्यालय के अध्यक्ष थे अन्य प्रमुख अधिकारियों में हरिनन्दन प्रसाद और रामनिहोरा सिंह थे जो छात्रों को देषभक्ति की प्रेरणा देते रहते थे। इस एकेडमी के सहायक प्राध्यापक सतीष चंद्र चक्रवर्ती थे, जिन्होंने अपने ओजस्वी भाशण से छात्रों को ब्रिटिष सरकार की दासता के जूते को अपनी कंधों से उतार फेंकने का आहवान किया। इससे उनके हृदय में राश्ट्रीय जागृति आई। स्वतंत्र भारत के प्रथम राश्ट्रपति डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद जब कलकत्ता में अपनी षिक्षा पूरी कर रहे थे वे भी इसी समय राजनीतिक चेतना से प्रभावित हुए। सर्वेन्टस ऑफ इण्डिया सोसाईटी की स्थापना कलकत्ते में हुई थी, जिसके सदस्य राजेन्द्र बाबू नहीं बने किंतु मानवता के प्रति प्रेम उनके तन मन में छा गया था।

यहाँ यह उल्लेख करना अप्रांसगिक नहीं होगा कि तत्काल देषभक्त राजनेता एवं स्वतंत्रता सेनानी, ब्रिटिष अत्याचारों से आम जनता को भयमुक्त करना चाहे रहे थे, ताकि वे आगे आनेवाले आंदोलनों के खुलकर भाग ले सके। उदाहरणर्थ दरभंगा के महाराज रामेष्वर सिंह, जिनके वंषजों का मुगल सम्राट अकबर से 1556 ई. में मिथिला क्षेत्र की अधिकांष भाग की जमींदारी मिली थी, के पास 2400 वर्गमील जमीन थी जो पूरे उत्तर बिहार के पूरी जमीन का रकवा का 11 प्रतिषत था।

महाराजा को बतौर भूमि की लगान की लगान से लगभग 4000000 रूपये प्रति वर्श आते थे। दरभंगा महाराज अपनी पूरी आमदनी का 10 प्रतिषत ब्रिटिष सरकार को भू–राजस्व के रूप में देते थे और 15 से 20 प्रतिषत प्रषासनिक कार्यो पर खर्च करते थे। बचे हुए पैसों का उपयोग राजा महाराजा अपने परिवार तथा सगे संबंधियों की षान षौकत और भोग–विलास पर खर्च करते थे। इसी प्रकार अन्य बड़े–बड़े जमींदार थे जिनके पास अपार संपत्ति ब्रिटिष सरकार की कृपा से थी। कुछ लोग जो नौकरी पेषा में थे तथा कुछ वाणिज्य व्यवसाय में लगे थे, उनकी स्थिति तो कुछ ठीक थी लेकिन आम जनता ब्रिटिष षासन और नौकरषाही की चक्की में पिसती जा रही थी। ब्रिटिष उपनिवेषवाद के विरूद्ध भारतीय स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए लोगों के बीच आत्म बलिदान की भावना अंदर ही अंदर पनप रही थी। तत्कालीन मिथिला क्षेत्र षासक और षोशित दो वर्गो के बीच अपनी स्वतंत्रता के लिए अकुला रहा था।

इस संक्रमण की बेला में बिहार के चंपारण में महात्मा गाँधी का पदार्पण ने लोगों के बीच राजनीतिक जागषति लाने में अपनी अहम भूमिका निभाई। महात्मा गाँधी ने बिहार को षोशण और उत्पीड़न की चक्की से उबारने के लिए वर्ग सहयोग का सिद्धांत एवं कार्यक्रम चंपारण में प्रारंभ किया। इस प्रकार तत्कालीन आर्थिक परिवेष और राश्ट्रीयता की भावना के तहत राजनैतिक जागरण ने गाँधी जी के लिए जन जागरण का मंच प्रदान किया। बरहरवा लखनसेन गाँव के देषभक्त षिव गुलाम लाल नामक उदार व्यक्ति ने विद्यालय खोलने के लिए अपना घर दान में दे दिया। राजनीतिक उद्देष्य की प्राप्ति के लिए गाँधी जी ने षिक्षा जागषति की आवष्यकता पर जोर दिया। इस उद्देष्य की प्राप्ति के लिए 14 नवम्बर 1917 ई. को गाँधी जी ने चंपारण के बड़हड़वा लखनसेन नामक गाँव में पहला विद्यालय की स्थापना की।

मिथिला क्षेत्र में प्रत्येक भाग में ब्रिटिष सरकार के प्रति विरोध के भाव पनप रहे थे। मुजफ्फरपुर के भूमिहार ब्राह्मण कॉलेजिएट स्कूल में छात्र काफी आन्दोलित थे। लगभग 30 छात्रों ने पढ़ाई छोड़कर गाँधी जी द्वारा संचालित असहयोग आंदोलन में भाग लिया। इसी तरह चंपारण के बगहा क्षेत्र के मिडिल स्कूल में छात्र एवं षिक्षक भी राश्ट्रीय आंदोलन में भाग लिये। दरभंगा का वाटसन स्कूल, नौर्थबुक जिला स्कूल, मधुबनी, भागलपुर आदि के स्कूली छात्र आंदोलन के लिए उद्धेलित थे।

1920 ई॰ के अंत तक मिथिला क्षेत्र के स्वतंत्रता पुजारी गाँधी जी द्वारा संचालित असहयोग आंदोलन में भाग लेने हेतु सक्रिय होने लगे। भागलपुर के बी॰एन॰जे॰ महाविद्यालय के 40 छात्रों ने असहयोग आंदोलन में भाग लिया। राजेन्द्र

बाबू ने पटना विष्वविद्यालय के सिनेट और सिण्डिकेट की सदस्यता से त्याग पत्र दे दिया। छात्रों के आमंत्रण पर 1929 ई॰ में सरदार बल्लभभाई पटेल भागलपुर कॉलेज गये तथा वहाँ कष्शक समुदाय के प्रति छात्रों के कर्तव्यों पर प्रकाष डाला। 1930 ई॰ में स्वतंत्रता आंदोलन में मिथिला क्षेत्र के अन्तर्गत स्थित समस्तीपुर के नजदीक स्थित समर्थाग्राम निवासी पंडित रामनिरीक्षण सिंह ने प्रतिदिन दर्जनों सभाऐं कर स्वतंत्रता आंदोलन के उद्देष्यों को जनता तक पहुँचाते थे और इस आंदोलन में अपने आप की पूर्णाहुति करने की सीख देते थे।

1931 ई॰ में आरा में बिहारी छात्र सम्मेलन का 24वाँ अधिवेषन हुआ जिसमें से स्वतंत्रता आंदोलन में सहयोग देने के लिए ग्रामीण से सहयोग लेने की बात छात्रों से कहीं गयी। धीरे–धीरे जनता के हृदय में राश्ट्रीयता जागषति आती गयी। 1940 ई॰ में मुजफ्फरपुर, आरा, दरभंगा के छात्रों ने स्वतंत्रता समारोहों में भाग लिया। मूँगेर के अली अषरफ एवं सुनील मुखर्जी जैसे छात्र नेता कैद कर लिए गये। 14 मार्च1940 ई. को जयप्रकाष नारायण की गिरफ्तारी के विरूद्ध पूरे प्रान्त में जयप्रकाष दिवस मनाया गया, जिसमें लोगों ने काफी उत्साह से भाग लिया। 16 नवम्बर 1940ई॰ को पटना, मुजफ्फरपुर तथा दरभंगा के छात्रों ने ब्रिटिष सरकार के द्वारा की गयी दमनात्मक कारवाई के लिए ''विरोध दिवस'' मनाया गया। अप्रैल 1941 ई॰ में मधुबनी मेंछात्र सम्मेलन हुआ जिसकी अध्यक्षता कलम के जादूगर श्री राम वष्क्ष बेनीपुरी ने की। 23 अगस्त 1943 ई॰ को बिहार प्रान्तीय छात्र सम्मेलन हुआ इसका उद्घाटन भाशण सर्वपल्ली राधाकष्ष्णन द्वारा किया गया। उन्होंने अपने भाशण में छात्रों को नैतिक विकास मानवीय गुण एवं सहिश्णुता का संदेष दिया ताकि उनमें राश्ट्रीय जागषति लायी जा सके।

ब्रिटिष षासन द्वारा भारतीय स्वतंत्रता प्रेमियों को जिस कठोरता, बर्बरता और बेदर्दी से दबाने और कुचलने का प्रयास किया गया। साथ ही साथ लिखने और बोलने के अधिकार का हनन किया गया तथा प्रेसपर बार–बारप्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रतिबंध लगाते रहे। इससे भी देषवासियों के मन में बेचैनी पैदा हो गयी। जनमानस में देष प्रेम लगाने और ब्रिटिष षासन के काले बादल को हटाने में बिहार और मिथिला क्षेत्र के विविध भाशायी पत्र–पत्रिकाओं ने अपने–अपने ढ़ंग से राश्ट्रीय जागृति लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मोहम्मद षफी दाउदी मुजफ्फरपुर के प्रसिद्ध अधिवक्ता थे, जिनके लेख एवं षायरी ने मिथिला क्षेत्र में स्वतंत्रता प्रेमियों के मन में नई उमंग भर दी। लोगों में उत्पन्न जागृति ने देष को स्वतंत्र कराने का जुनून पैदा कर दिया। जन–जन और कण–कण बन्देमातरम् के उदघोश से गूँज उठा।

संदर्भ :–

1. मिथिला का इतिहास– डा॰ राम प्रकाश षर्मा
2. ए हिस्ट्री आफ दरभंगा राज– जटा शंकर झा
3. भारत के स्वतंत्रता आंदालन में बिहार का योगदान– विषेशांक–1998, पृष्ट–45.
4. बायोग्राफी ऑफ इण्डियन पेट्रियॉट, महाराजा लक्ष्मीष्वर सिंह ऑफ दरभंगा, पटना–1972.
5. बिहार थ्रू द एजेज– आर॰आर॰दिवाकर
6. बिहार में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास– डॉ॰के॰के॰दत्ता
7. हिस्ट्री ऑफ बिहार, नई दिल्ली– 1985–रामसेवक
8. बंगाल डिस्ट्रीक्ट गजेरियरर्स चम्पारण, 1917
9. हिस्ट्री ऑफ मिथिला – उपेन्द्र ठाकुर
10. अग्रेरियन अनरेस्ट एण्ड सोषियो इकानॉमिक चेंज इन बिहार– अरविंद एन॰दास
11. दि हिस्ट्री ऑफ मिथिला एण्ड दि रेकार्डस ऑफ दरभंगा राज, 10, 1976 डी॰वीं॰क्लाइब
12. दरभंगा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, पृष्ट–57, एल॰एस॰ए॰ओमेली
13. इण्टर रेकार्डस, चम्पारण, मुजफ्फरपुर, पृष्ठ 198–99 औमेली
14. सिसिल डिस ओबिडियन्स मूभमेन्ट इन बिहार– भोज नंदन प्रसाद सिंह
15. भारत के स्वतंत्रा आंदोलन में बिहार का शिक्षा योगदान विषेशांक–1997.

***